कक्षा नवमीं स्तर पर मूल्य विवचेना प्रतिमान की प्रभाविकता का सामाजिक मूल्य एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन

मधुलिका वर्मा*
दीपमाला यादव**

प्रस्तुत शोध में दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य पर विवेचना प्रतिमान के प्रभाव एवं प्रतिमान पर उनकी प्रतिक्रिया हेतु अध्ययन किया गया। शोध के लिए इंदौर शहर के तीन विद्यालयों में अध्ययनरत दसवीं कक्षा के कुल मिलाकर 96 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित सामाजिक मूल्य मापनी एवं प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया है। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि मूल्य विवेचना प्रतिमान विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के विकास में सार्थक रूप से प्रभावी है एवं विद्यार्थियों के इस प्रतिमान पर प्रतिक्रिया भी सकारात्मक पायी गयी।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति से ही समाज का और समाज से ही व्यक्ति का अस्तित्व जुड़ा हुआ है। अतः व्यक्ति के आदर्शों, मूल्यों में बदलाव समाज पर प्रभाव डालते हैं। इसी प्रकार समाज के अंदर मूल्यों के परिवर्तन से व्यक्ति के मूल्यों में भी परिवर्तन आता है। अतः व्यक्ति के चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, सामाजिक कर्तव्यों का

* *वरिष्ठ व्याख्याता,* शिक्षा संस्थान, दे.अ.वि.वि., इंदौर 452017
** *शोध छात्रा,* शिक्षा संस्थान, दे.अ.वि.वि., इंदौर 452017

पालन, जीविकोपार्जन की क्षमता तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार जैसे व्यापक उद्देश्य सामाजिक मूल्यों के विकास से ही संभव हैं।

मूल्य

वास्तव में मूल्य शब्द की शुरुआत साधारण एवं नियंत्रित अर्थ के रूप में अर्थशास्त्र से हुई है। जहाँ मूल्य का अर्थ उपयोगिता में किसी चीज़ का महत्त्व व आदान-प्रदान में महत्त्व से लगाया जाता है। मानव के मूल्य वह मानक या मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है।

मूल्य की परिभाषा

राकेच (Rokeach 1973) के अनुसार, *"मूल्य विश्वासों को कायम रखने व संचालन का विशेष तरीका या गुज़ारा करने की अंतिम अवस्था है।"*

फ्रेन्किल (Frankel 1977) के अनुसार, *''मूल्य नियामक मानदण्ड हैं, जिनके आधार पर व्यक्तियों की चुनाव प्रक्रिया प्रभावित होती है तथा वे अपने प्रत्यक्षीकरण के अनुरूप विभिन्न क्रियाओं का चुनाव करते हैं।''*

क्रिश्चयन बाउम (Kirschen Baum 1973) के अनुसार, *"यह वह उपागम है, जिसके तहत् प्रश्नों व गतिविधियों को मूल्य प्रक्रिया में शिक्षण हेतु संरचित कर उपयोग किया जाता है जो व्यक्तियों के जीवन के बहुमूल्य क्षेत्र में मूल्य प्रक्रिया के दौरान मूल्यों को कौशलयुक्त प्रयुक्त करने में मदद करता है।"*

मूल्य मनुष्य के लिए एक मानदंड की तरह कार्य करते हैं। जब मनुष्य किसी वस्तु या विचार के प्रति निर्णय लेने में जिस आधार को लेकर उस वस्तु या विचार को अच्छा-बुरा, सही-गलत अथवा प्रशंसा-आरोप साबित करता है, तब मनुष्य के लिए वे आधार उसके मूल्य कहलाते हैं।

सामाजिक मूल्य

समाज में रहने वाले व्यक्ति के सामाजिक मूल्य उसके समाज के मूल्यों के अनुसार निर्मित होते हैं।

गुड के अनुसार, "सामाजिक मूल्य मनुष्य अंतर्क्रिया के वे तथ्य हैं जो समूह जीवन के उचित कार्यों को सम्माननीय, सार्थक व महत्वपूर्ण बनाते हैं।

सामाजिक मूल्य वे तथ्य होते हैं जिनके माध्यम से समाज का सदस्य संरक्षण व पद वृद्धि ढूँढ़ता है।

मूल्य विवेचना प्रतिमान

सन 1960 के दशक में जब मूल्य स्पष्टीकरण एक क्रान्ति के रूप में उदय हुआ, तब श्रीमान वीयर ने इस प्रतिमान का विकास किया। मूल्य विवेचना प्रतिमान सामाजिक अंतर्क्रिया प्रतिमान परिवार के अंतर्गत आता है।

मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रभाव

अ. अनुदेशनात्मक प्रभाव

1. मूल्य स्पष्टीकरण को बेहतर बनाना
2. मूल्य निर्णय शक्ति को बेहतर बनाना

ब. पोषक प्रभाव

1. अधिगम काशैलों को बेहतर बनाना
2. आत्मगौरव को बेहतर बनाना
3. शाला के प्रति अभिवृत्ति का विकास करना
4. समायोजन बेहतर करना
5. कक्षागत परिस्थिति बेहतर बनाना
6. व्यक्तिगत शक्तियों का पोषण करना

मूल्य विवेचना प्रतिमान की पदयोजना

1. सोपान प्रथम – दुविधा का प्रस्तुतिकरण
2. सोपान द्वितीय – क्रिया का विभाजन
3. सोपान तृतीय – लघु समूह विवेचना हेतु व्यवस्थापन
4. सोपान चतुर्थ – कक्षा विवेचना का संचालन
5. सोपान पंचम – विवेचना समाप्ति

उद्देश्य

1. मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों के पूर्व सामाजिक मूल्य एवं पश्च सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों के माध्यों की तुलना करना।
2. मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के पूर्व एवं पश्च प्राप्तांकों के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रियाएँ सकारात्मक होंगी।

प्रविधि

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में इंदौर शहर के विभिन्न विद्यालयों के कक्षा नवमीं के विद्यार्थी थे। शोध हेतु न्यादर्श के लिए उद्देश्यपरक न्यादर्श चयनित तकनीक अपनायी गयी। शोध में मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रभाव को देखने हेतु जनसंख्या में से तीन विद्यालय के नवमीं कक्षा के लगभग 96 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। उपरोक्त सभी न्यादर्श माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल के 2008-09 के नियमित तथा हिंदी माध्यम के विद्यार्थी थे। जिनकी उम्र 13-16 वर्ष के मध्य थी तथा सभी हिंदी बोल, लिख व सुन सकने वाले थे।

उपकरण

सामाजिक मूल्य – सामाजिक मूल्य के मापन

हेतु शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित सामाजिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। इस मापनी में कुल 27 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिसमें प्रत्येक विकल्प को निश्चित अंक प्रदान किए गये। यह परीक्षण मुख्यत: पाँच सामाजिक मूल्यों का आकलन करता है जो हैं – कर्तव्य, आदर, सहयोग, प्रतिज्ञाबद्ध होना तथा न्याय।

प्रतिक्रिया – उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया जानने हेतु शोधकर्त्ता द्वारा प्रतिक्रिया मापनी का विकास किया गया। मापनी के 17 कथन मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति तथा इसके प्रस्तुतिकरण से संबंधित विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ज्ञात करते हैं।

प्रदत्त संकलन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रदत्तों का संकलन उद्देश्यपरक विधि द्वारा चयनित विद्यालय में किया गया। इस शोधकार्य हेतु सामाजिक मूल्य से संबंधित पाठ योजना का निर्माण कर लिया गया। संपूर्ण न्यादर्श को उपचार देने के पूर्व सामाजिक मूल्य मापनी प्रदान की गई। अब नवमीं कक्षा के 96 विद्यार्थियों को मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा तैयार किये गये पाठयोजना की सहायता से उपचारित किया गया। उपचार के पश्चात इस समूह पर पुन: सामाजिक मूल्य परीक्षण पश्च परीक्षण के रूप में प्रदान किये गये। अंत में उपचारित समूह पर मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रिया के अध्ययन हेतु उन्हें प्रतिक्रिया मापनी प्रदान की गयी।

परिणाम, विवेचना एवं चर्चा

मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों के पूर्व सामाजिक मूल्य एवं पश्च सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों के माध्यों की तुलना करना

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य था – "मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों के पूर्व एवं पश्च सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों के माध्यों की तुलना करना।" इससे संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण सहसंबंध टी परीक्षण की सहायता से किया गया। इसके परिणाम सारणी 1 में प्रस्तुत किये गये हैं।

सारणी 1

परीक्षणवार सामाजिक मूल्य योग्यता के माध्य (M), मानक विचलन (SD) एवं टी (T) का मान

परीक्षण	*N*	*M*	*SD*	*T-Value*
पूर्व परीक्षण	96	50.52	6.50	6.84**
पश्च परीक्षण	96	55.18	3.94	

** .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

सारणी 1 से विदित है कि उपचार के लिए सहसंबंध टी का मान 6.84 है जो df = 95 के लिए .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इससे यह परिलक्षित होता है कि मूल्य विवेचना प्रतिमान से उपचारित विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य योग्यता के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर है। अत: शून्य परिकल्पना ''मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के पूर्व एवं पश्च प्राप्तांकों के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है" निरस्त की जाती है। सारणी से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य योग्यता के पश्च परीक्षण माध्य फलांक 55.18 है जो कि पूर्व परीक्षण माध्य फलांक 50.52 से उच्च है। अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मूल्य विवेचना प्रतिमान विद्यार्थियों की सामाजिक मूल्य योग्यता के विकास में सार्थक रूप से प्रभावी है।

विवेचना

इस निष्कर्ष का कारण मूल्य विवेचना प्रतिमान की पद योजना हो सकता है। इस विवेचना प्रतिमान के द्वारा विद्यार्थियों को हिंदी तथा सामाजिक विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक से सामाजिक मूल्य से संबंधित मूल्य दुविधाओं का निर्माण कर सामाजिक मूल्य योग्यता का विकास करने का प्रयास किया गया है। इस प्रतिमान में विद्यार्थी को विभिन्न दिशाओं पर सोचने, एक-दूसरे से अंतर्क्रिया करके समस्या से संबंधित विकल्पों के कारण पर विवेचना करके तथा स्वयं को मुख्य भूमिकाओं मे रखकर सामाजिक मूल्य योग्यता का विकास करने का प्रयास किया जाता है। इसी कारण हो सकता है कि न्यादर्श के सामाजिक मूल्य योग्यता के पूर्व प्राप्तांकों की तुलना में पश्च प्राप्तांक सार्थक रूप से उच्च पाये गये।

मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य था - ''मूल्य विवेचना प्रतिमान द्वारा उपचारित किये गये कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।'' इससे संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत (%) सांख्यिकीय तकनीकी द्वारा किया गया। प्राप्त परिणामों को सारणी 2 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 2

विद्यार्थियों की मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति प्रतिक्रियाओं का प्रतिशत मान

क्र.	*कथन*	*पूर्णत: सहमत*	*अनिश्चित*	*पूर्णत: असहमत*
1	मैं सभी विषय इस प्रतिमान से पढ़ना चाहता/चाहती हूँ।	66.66%	15.62%	17.70%
2	इसमें छात्र-शिक्षक अंतर्क्रिया के अवसर होते हैं।	63.54%	19.76%	16.6
3	मैं समझता/समझती हूँ कि इस विधि से सभी विषय नहीं पढ़ाए जा सकते।	36.54%	23.95%	39.5
4	इस विधि से पाठ्यक्रम पूरा नहीं किया जा सकता।	65.41%	28.15%	36.45%
5	इस विधि से पढ़ना रुचिकर नहीं लगता है।	27.08%	22.91%	50%
6	इस विधि से पढ़ने में अधिक समय लगता है।	30.20%	27.08%	42.70%
7	इस प्रतिमान से कक्षा को अनुशासित किया जाता है।	33.33%	19.79%	46.87%
8	इस प्रतिमान के द्वारा पढ़ने से छात्र अधिक क्रियाशील हो जाते हैं।	59.37%	20.83%	19.79%
9	इस विधि के माध्यम से वाद-विवाद करने की क्षमता विकसित होती है।	60.41%	22.91%	16.66%
10	यह विधि हमें विभिन्न दिशाओं में सोचने पर बाध्य कर देती है।	63.54%	25%	11.45%
11	इस विधि में विचारों को प्रकट करने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं।	54.58%	19.79%	15.62%
12	छात्र दूसरों के विचारों को धैर्यपूर्वक सुनते हैं।	64.58%	21.87%	13.54%
13	यह विधि समस्याएँ सुलझाने में मदद करती है।	62.50%	19.79%	17.70%
14	इस विधि में हमें मुख्य पात्र से संबंधित अनेक विकल्पों का ज्ञान होता है।	70.83%	19.79%	9.37%
15	इस विधि के माध्यम से हमें समस्या से संबंधित अनेक प्रश्नों पर विचार करने की क्षमता पैदा होती है।	79.16%	12.50%	8.33%
16	इस विधि के माध्यम से हमें समस्या से संबंधित अनेक प्रश्नों पर विचार करने को क्षमता पैदा होती है।	67.70%	20.83%	11.45%
17	मुख्य पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर विचार करने की क्षमता उत्पन्न होती है।	66.66%	20.83%	12.50%

इस प्रकार प्रतिमान के प्रति विद्यार्थियों की औसत प्रतिक्रिया निकालने पर सत्रह पदों में से छः पदों को छोड़कर शेष ग्यारह पदों पर 60% से अधिक विद्यार्थियों ने इस विधि के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रदर्शित की है। अतः अधिकांश विद्यार्थियों की प्रतिमान के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है।

विवेचना

उपरोक्त निष्कर्ष का कारण मूल्य विवेचना प्रतिमान में अपनायी जाने वाली प्रक्रिया हो सकता है। जिन छः पदों पर 60% से कम सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है उसका कारण यह हो सकता है कि कई विद्यार्थी सभी क्षेत्रों में इस प्रतिमान के द्वारा पढ़ना रुचिकर नहीं समझते हों, वे मानकर चलते हों कि इस प्रतिमान द्वारा सभी विषय जैसे गणित, भौतिक शास्त्र आदि विषय नहीं पढ़ाये जा सकते हैं। इस प्रतिमान में विद्यार्थी को स्वतंत्र होकर बोलने, अपने स्थान से उठकर दूसरे विकल्प से सहमत समूह में बैठने की छूट होती है। अतः कुछ विद्यार्थी ये मानते हैं कि इस प्रतिमान द्वारा अनुशासन बिगड़ जाता है। चूंकि इस प्रतिमान से पढ़ने में समय भी अधिक लगता है। अतः हो सकता है कि इन कारणों से छः पदों पर 60% से कम विद्यार्थियों ने प्रतिक्रिया प्रस्तुत की।

शेष ग्यारह पदों पर 60% से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिक्रिया प्रस्तुत की इसका कारण हो सकता है कि मूल्य विवेचना प्रतिमान से अध्यापन बहुत से विद्यार्थियों को रुचिकर लगा हो, उन्हें विभिन्न पहलूओं पर सोचने, नायक के स्थान पर स्वयं को रखकर समस्या का समाधान करने तथा मूल्य द्वंद्व के दौरान किसी एक मूल्य का चयन करने की क्षमता का विकास अनुभव हुआ हो।

निष्कर्ष

1. मूल्य विवेचना प्रतिमान विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के विकास में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया।
2. मूल्य विवेचना प्रतिमान के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया सकारात्मक पायी गयी।

शैक्षिक निहितार्थ

प्राचार्य एवं अध्यापक – प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि मूल्य विवेचना प्रतिमान के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य में वृद्धि संभव है। अतः प्राचार्य अपने विद्यालय के अध्यापकों को अपने-अपने विषय के संदर्भ में विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के विकास हेतु प्रशिक्षित करवा सकता है, इसके लिए कार्यशालाएँ आयोजित करवा सकता है। शिक्षकों को इस तरह की विधियों से परिचित होने की आवश्यकता है जो छात्र केंद्रित हों एवं शिक्षक को अपने विषय में अधिक-से-अधिक अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग दें। वर्तमान शोध अध्ययन के परिणामों से शिक्षक वर्ग लाभान्वित हो सकते हैं एवं इस विधि का उपयोग कर वे विद्यार्थी वर्ग को भी लाभान्वित कर सकते हैं।

विद्यार्थी - सूचना एवं प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में विद्यार्थी भी स्वयं का मानसिक विकास करना चाहते हैं। लेकिन विद्यार्थी मूल्यों के संदर्भ में अपनी स्थिति बताने में, सही विकल्प चयन में, स्थिति का विश्लेषण करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं, इसके लिए उन्हें दिशा निर्देशन की आवश्यकता है। अत: इस शोध अध्ययन के परिणामों से विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते हैं। इस प्रतिमान का उपयोग कर विद्यार्थी विवेचना के माध्यम से द्वन्द्व की स्थिति का समाधान करने के लिये विभिन्न विकल्प व विकल्पों के प्रमुख कारणों पर विचार करने की योग्यता का विकास कर सकते हैं। स्वयं को मुख्य पात्र के स्थान पर रखकर तथा विभिन्न विकल्पों से जन समुदाय को होने वाली समस्या पर विचार करने में सक्षम हो पायेंगे। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के परिणामों के संदर्भ में विद्यार्थी मूल्य विवेचना प्रतिमान का उपयोग एक ही दिशा में अपनी सोच न रख प्रत्येक तथ्य हेतु अनेक दिशाओं में चिंतन करते हुए किसी एक बेहतर परिणाम तक पहुँच सकते हैं।

प्रशासक - मूल्य विवेचना प्रतिमान के परिणाम प्रोत्साहित करने वाले हैं। इस प्रतिमान की उपयोगिता को देखते हुए तथा प्रतिमान के उपयोग करने के लिए समय-सारणी में लचीलापन, कक्षा परिवर्तित करने की स्वतंत्रता, शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता हेतु प्रशासकों के सहयोग की आवश्यकता होती है। इसके लिये आवश्यक है कि प्रशासक इस प्रतिमान के लाभों से परिचित हों एवं इस हेतु प्रस्तुत शोध परिणाम प्रशासक को सहयोग करेंगे।

पाठ्यचर्या निर्माता - पाठ्यचर्या निर्माताओं का उद्देश्य यह है कि वह पाठ्यचर्या में अधिगमकर्ता की आवश्यकता एवं समाज की माँग एवं परिवर्तित परिस्थितियों को सम्मिलित करें। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या निर्माता, पाठ्यचर्या में विभिन्न विषयों में दुविधात्मक परिस्थितियाँ इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं जिन पर विवेचना संभव हो। इस प्रकार वे इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों का लाभ ले सकते हैं।

संदर्भ

कूम्बस, जे.आर. एवं एम. मिओक्स. 1971. *टीचिंग स्ट्रेटेजी फ़ॉर वेल्यू एनालिसिस इन मेटकल्फ*, वेल्यू एजूकेशन, नेशनल काउनसिल फ़ॉर सोशल स्टेडिज, वाशिंगटन डी. सी.

गुप्त, एन. 1987. *मूल्य परक शिक्षा*, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, राजस्थान

गुड, सी.वी. 1973. *डिक्शनरी ऑफ़ एजूकेशन*, मैकग्रा हिल बुक कंपनी, न्यूयार्क

देवी, वी. 1993. *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की प्रभाविता का मूल्य निर्णय के विकास के संदर्भ में अध्ययन*, अप्रकाशित एम.एड. (शिक्षा) लघु शोध प्रबन्ध, दे.अ.वि.वि.

फ्रेन्किल, जे.आर. 1977. *हाउ टू टीच वेल्यूज़ एन एनालिटिकल एप्रोच*, प्रिंटाइस हॉल, इंग्लेवूड न्यू जर्सी

बघेल, ए. 2006. *कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों में मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की प्रभाविता का मूल्य स्पष्टीकरण, तार्किक योग्यता तथा प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन*, अप्रकाशित एम.एड. शिक्षा लघु शोध प्रबन्ध, दे.अ.वि.वि.

बंसल, एन. 2007. *हाई स्कूल स्तर पर मूल्य विश्लेषण प्रतिमान एवं परम्परागत शिक्षण को मूल्य निर्णय के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन*, अप्रकाशित एम.एड. (शिक्षा) लघु शोध प्रबन्ध, दे.अ.वि.वि.

बाउम, क्रिश्चन एच. 1973. *रीडिंग इन वेल्यू किलियरीफिकेशन, मिनियापोलिस*, विन्सटन प्रेस

रोकेच. 1973. *नेचर ऑफ़ ह्यूमन वेल्यू*, कोलिस मेकमिलन पब्लिकेशन, लंदन

सिंह, ए.के. 1991. *कम्पेरेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ़ वेल्यू डिस्कशन मॉडल विथ ट्रेडिशनल अपरोच फ़ॉर डवलपिंग वेल्यू किलियरीफिकेशन ऑफ़ कॉलेज स्टूडेन्टस*, अप्रकाशित पीएच. डी. थीसिस, डी. ए. वि. वि., इन्दौर